व्यक्ति के ठहरने के तीन कारण

कई बार हम देखते हैं कि इंसान एक स्थान से दूसरे स्थान पर भागता ही रहता है लेकिन अगर उससे पूछा जाये कि आप एक स्थान पर क्यों ठहर नहीं पा रहे हैं तो इसका कारण ना उसे समझ में आता है ना हमें। पूरा जीवन हम इस बात को पकड़ने में रह जाते हैं कि आखिर ठहरने का क्या कारण हो सकता है। क्योंकि जब तक कहीं ठहराव नहीं होगा तब तक उन्नति नहीं हो सकती । जैसे इस ज्ञान में हम आये लेकिन आने का कारण अगर कुछ ठोस नहीं होगा तो हमारी उन्नति भी उतनी नहीं होगी।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

जब हम अपने जीवन को बहुत ध्यान से देखेंगे तो हम पायेंगे कि हमें हमेशा तीन बातों की तलाश होती है, वो या तो किसी से कुछ प्राप्ति की बात हो, या किसी कर्त्तव्य की बात हो, या किसी से बहुत गहरा लगाव हो।

ये प्रमुखतः तीन कारण हैं, जो एक व्यक्ति को किसी एक स्थान पर ठहरने को विवश करते हैं। जैसे अगर आपको किसी के लिए भावना बैठ जाये, उसके प्रति श्रद्धा हो तो उस श्रद्धा के लिए, उस भावना के लिए आपका मन वहां पर रहने का करेगा, उसके लिए सोचने का करेगा, उसके लिए कुछ करने के लिए करेगा, इसी प्रकार जब हम किसी से बहुत गहराई से अटैच हो जाते हैं तो भी हमारा मन उस लगाव के कारण वहां पर रुकता है।

इसलिए जितने भी इतिहास में प्रेम प्रसंग हुए उदाहरण के रूप में लैला मजनू, हीर रांझा हैं, किसी और जगह के थे, किसी यात्रा पर गये, और किसी के प्रेम में वो वहां पर ठहर गये, बंध गये और अपना शेष पूरा जीवन वहीं बिता दिया। इसी तरह कोई भी बहुत बड़ी ज़िम्मेवारी जिससे हमको लगता है कि अगर हम यह ज़िम्मेवारी पूरा नहीं करेंगे या इसको हम छोड़ेंगे तो इसमें देश का नुकसान होगा, उदाहरण के लिए जैसे जितने भी देशभक्त थे कहीं और से आये, लेकिन देश के प्रति उन्हें अपना कर्त्तव्य समझ में आया, इसका उन्हें एहसास हुआ तो उन्होंने अपना सर्वस्व जीवन उस देशभक्ति के कारण बलिदान कर दिया, समर्पण कर दिया। तो यह तीन प्रमुख कारण है जिसके आधार से व्यक्ति कहीं न कहीं रुकता है, रहता है और वहां से जाता नहीं है ।

चाहे जितने भी शोधकर्ता देखें, आये थे किसी स्थान पर घूमने के लिए, लेकिन किसी न किसी कारण वश चाहे उनके लिए शोध का विषय हो या कोई और कारण बना जिसके कारण वो वहीं रच बस गये ।

अब हम इस परमात्म ज्ञान की थोड़ी चर्चा कर लेते हैं। इस परमात्म ज्ञान में भी वही उन्नति कर पा रहे हैं, या ठहर पाये हैं, या चल रहे हैं या सहज भाव से चल पा रहे हैं जिन्हें शिव बाबा के प्रति सच्ची श्रद्धा, संस्था के प्रति सच्चा भाव, बाबा के कर्त्तव्यों से अति स्नेह है ।

नहीं तो इस ज्ञान में आने का आकर्षण तो है, लेकिन आकर्षण ज़्यादा दिन तक नहीं चलता। उदाहरण के लिए इस दुनिया में हम लाखों लोगों से आकर्षित हो सकते हैं, लेकिन प्यार एक दो से ही कर सकते हैं, सबसे नहीं। शुरू में यह ज्ञान सबको अच्छा लगता है लेकिन ज्ञान से प्यार हो जाये, ये ज्ञान ही उनके लिए जीवन बन जाये, यह बहुत कम के साथ होता है, शायद इसीलिए परमात्मा कहते हैं कि यहां आठ रत्न, एक सौ आठ, सोलह हज़ार की माला बनती है, क्योंकि वह ज्ञान को सच्चे दिल से समझते हैं और समाते हैं। उनको बाबा से गहरा लगाव भी है और कर्त्तव्य की समझ भी है। ऐसा नहीं कि बाकी नहीं समझते हैं, वे भी समझते हैं लेकिन अपनी सुविधा अनुसार, तो जिन्होंने आकर सुविधाएं देखीं, सुविधा के साथ जीये, जिन्हें अपनी ज़िम्मेवारी का एहसास नहीं है, वो यहां रहते भी जैसे दुनियावी जीवन जी रहे हैं, क्योंकि परमात्मा के साथ रहना, परमात्मा के घर में रहना और घर में रहने के बाद बाहर की बातें करना, बाह्य बातों में समय देना, यह परमात्मा के प्रति सच्चा प्यार, श्रद्धा की निशानी नहीं, यह परमात्मा के घर के साथ, परमात्मा के कर्त्तव्य के साथ न्याय नहीं है। शायद इसीलिए इस जीवन को अपनाने के बाद भी हम संतुष्ट नहीं हैं क्योंकि जहां पर सौ प्रतिशत इनवेस्टमेंट है, वहीं सौ प्रतिशत रिज़ल्ट है। अर्थशास्त्र के हिसाब से भी कहा जाता है कि जितना हम इनवेस्ट करते हैं उत्पादकता भी उसी हिसाब से होती है। जैसे अगर हम ने एमबीए करने में दस लाख लगाये तो हमको कम से कम डेढ़ लाख की जॉब तो मिलनी चाहिए, लेकिन अगर किसी ने दस हज़ार का कम्प्यूटर कोर्स किया है तो उसको दो हज़ार की जॉब ठीक ही है ना! इसी तरह यहां पर समर्पित होने या बाबा का बनने से फायदा तब है जब हम अपना समय, संकल्प, शक्ति सौ प्रतिशत इस कर्त्तव्य में लगायें, तो उसका सौ प्रतिशत रिटर्न मिलेगा ही, इसीलिए सबसे पहले यह चेक करना है कि मैं यहां क्यों हूँ, मुझे कर्त्तव्य की फीलिंग है? मुझे बाबा से सच्चा प्यार है? उनके प्रति सच्ची श्रद्धा है? अगर है तो रहना सार्थक है, नहीं तो हम अपने साथ न्याय नहीं कर पा रहे हैं। ये है हमारी सच्ची समझ और उसकी परख। इस पैरामीटर पर खुद को रखकर चेक करें और आगे बढ़ें।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दें

दृढ़ पवित्रता और मास्टर सर्वशक्तिवान के अभ्यास से सफलता

मन की बातें

- राजयोगी ब.कु. सूर्य

प्रश्न : मैं एक साल से ज्ञान में हूँ, घर वाले शादी करवाना चाहते हैं लेकिन मैं शादी नहीं करना चाहती। मैं घर वालों से झगड़ा भी नहीं करना चाहती, ना ही उनका दिल दुखाना चाहती हूँ। कृपया बतायें कि बीच का कोई ऐसा मार्ग निकल सकता है?

उत्तर : बहुत ही अच्छा प्रश्न आपका है कि सांप भी मर जाये और लाठी भी न टूटे। लेकिन आपको अपनी प्योरिटी में दृढ़ तो होना ही पड़ेगा। एक बार तो बताना पड़ेगा माँ-बाप को कि मैं ये पवित्र जीवन क्यों जीना चाहती हूँ। देखिये बहुत कुमार और कुमारियां स्ट्रीक्ट कहते हैं कि हम शादी नहीं करेंगे तो ये बात कहीं न कहीं हर्ट करने लगती है, दूसरों का फिर दबाव बनने लगता है। सीधा नहीं, अपनेपन से, बहुत प्यार से क्लीयर कर दें कि हम शादी क्यों नहीं करना चाहते। जैसे हमें प्रभु मिलन हुआ है, उसकी प्राप्ति हुई है, उसने संदेश दिया है कि बच्चे तुम इस अन्तिम जन्म में पवित्र बनो। तुम्हें भारत की बहुत बड़ी सेवा करनी है। तुम्हें प्रकृति को पावन बनाना है। जितनी अच्छी स्थिति में होकर अपनी सुन्दर बात कहेंगे उतना लोग सहमत होंगे कि आपकी बात ठीक है। शादियां तो सभी कर रहे हैं हमारे घर में, दो ने कर ली, एक को ब्रह्मचर्य में रहने दो। सहयोग मिल जायेगा, लेकिन रोज़ सवेरे उठकर आपको प्रैक्टिस करनी है जो सबकॉन्शियस माइंड की प्रैक्टिस है। मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, और ये आत्मायें माँ-बाप जो भी बन्धन डालते हैं वे मेरे गुड फ्रेन्ड हैं, मेरे सहयोगी हैं, और बस 21 दिन तक ये कर लें तो माँ-बाप निश्चित रूप से सहयोगी बन जायेंगे। और इनका ये प्रेशर, ये बंधन समाप्त हो जायेगा।

प्रश्न : मैंने पुणे में एडमिशन लिया है। मुझे यहाँ बिल्कुल भी अच्छा नहीं लग रहा है। मुझे कुछ भी यहाँ की बातें अच्छी नहीं लग रही हैं, मैं यहाँ क्या करूँ? मुझे गुस्सा भी बहुत आता है, ज़्यादा गुस्सा आने पर मैं रोती भी हूँ, मुझे समझ में नहीं आ रहा है मैं क्या करूँ?

उत्तर : हरेक बच्चों के साथ तो ये होता ही है, नई जगह गये, जब तक अच्छे फ्रेंड न मिलें, जब तक उनसे न घुले-मिलें, तब तक ये थोड़ी उदासी की स्थिति रहती है बच्चों में। माँ-बाप को भी छोड़ कर जाते हैं तो मोह तो रहता है ना। माँ याद करती होगी आपको, तो माँ के इस मोह के वाइब्रेशन से आप विचलित होते रहते होंगे। ये सभी माताओं को बहुत ध्यान से समझ लेना चाहिए कि मोह तो माता का है बच्चों में, लेकिन वो मोह इतना ना हो कि वो जहाँ गये हैं वो वहाँ चैन से ना रह पायें। ये बहुत सूक्ष्म वाइब्रेशन्स की गति है जो इफेक्ट करती रहती है। अब आपको तो यही सोचना है कि मैं तो यहाँ पढ़ाई के लिए आई हूँ। किसी और एन्जॉयमेंट के लिए नहीं। अब मुझे पढ़ाई पर ध्यान देना है। तो आपकी एनर्जी जब पढ़ाई में लगने लगेगी ना तो बाकी सब चीज़ों को आप भूल जायेंगी। ये मोह भी धीरे-धीरे हल्का हो जायेगा क्योंकि आखिर कुछ करना है तो माँ को छोड़के तो जाना ही पड़ता है। लड़की की शादी होती है तो भी वो माँ को छोड़के जाती है, नये घर में जाती है तो दो-चार दिन सब पराया-पराया लगता है, फिर उसे वहीं रहना है क्योंकि वो उसके अपने हैं तो घुल-मिल जाती है तो ठीक हो जाती है। तो पढ़ाई पर ध्यान दें और तब तक मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ और एक महान आत्मा हूँ, मैं बहुत खुशनसीब हूँ, मैं बहुत भाग्यवान हूँ... सवेरे उठते ही ये संकल्प किया करें पांच-पांच बार। तो मन एक एनर्जी को प्राप्त करेगा और बहुत जल्दी आपका मन लग जायेगा।

प्रश्न : मुझे ग्यारह साल से डरावने सपने बहुत आते हैं। स्वप्न में कोई मरा हुआ व्यक्ति मुझे ज़िंदा दिखाई देता है। कभी कोई भूत प्रेत दिखाई देते हैं, तो कभी सांप या जंगली जानवर। मैं बहुत डर जाती हूँ। मैं ऐसा क्या करूँ जो मुझे ऐसे सपने ना आयें?

उत्तर : आपको बस सिम्पल प्रयोग करना है। सोने से पहले बहुत गुड फीलिंग से... मैं मास्टर सर्वशक्तिवान आत्मा हूँ और लिखें 108 बार कुछ दिन, फिर भले ही उसको 51 बार कर दें। और कम समय रहे तो 21 बार अवश्य लिखें। और मैं निर्भय हूँ ये संकल्प करें। सोते-सोते मेरी नींद बिल्कुल स्वप्न रहित होगी, मैं बहुत निर्भय हूँ, मेरी नींद स्वप्न रहित होगी...ये संकल्प करते-करते सोयें। कुछ ही दिनों में आपको सफलता मिलने लगेगी। अगर हम रात को कुछ अच्छे अभ्यास करके सोते हैं, अपने पेट को अच्छा रखते हैं, एसीडिटी ना हो रही हो और मेडिटेशन करके सोयें, कुछ अच्छी क्लास सुनकर सोयें और इस तरह सबकॉन्शियस माइंड के प्रयोग करके सोयें तो निश्चित रूप से बहुत चीज़ें ठीक हो जाती हैं।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'